Paper CC07 : Applied Theory

राग – कौशिक कान्हड़ा

परिचय

राग कौशिक कान्हड़ा एक प्राचीन राग है। यह राग मूलत दो अंगों में गाया जाता हैं– बागेश्री तथा मालकौंस अंग। इस राग के जितने भी स्वरूप हैं, इन्हीं दो अंगों से संबंधित हैं। जहाँ तक काफी थाट जन्य बागेश्री अंग के कौशिक कान्हड़ा का प्रश्न हैं, यह अब प्रचार में नहीं के बराबर हैं। कहा जाता है कि बागेश्री अंग के कौशिक कान्हड़ा में माधुर्य की कमी के कारण समाज के चित्त का रंजन करने में असमर्थ रहा है। जैसा कि राग के नाम से ही स्पष्ट है कि इसे मालकौंस अंग का ही राग मानना चाहिए, क्योंकि कौशिक, कौशिकी, कौंस, कौंसी, इत्यादि नाम मालकौंस से संबंधित हैं, जो कि अति प्राचीन है। इस प्रकार प्रस्तुत राग बागेश्री अंग की अपेक्षा मालकौंस अंग का ही अति प्राचीन होना सिद्ध होता हैं। प्रचार में इस राग को कौशिक, कौशिकी, कौंसी, कौशिक कान्हड़ा, इत्यादि अनेक नाम से संबोधित करते है। कौशिक कान्हड़ा के लिए इस प्रकार कहा गया है – *''काँहड़ा मालकोशच्च मिलतोऽत्र यथा यथम्''* अर्थात् कान्हड़ा में मालकौंस को मिलाने से कौशिक कान्हड़ा की उत्पत्ति होती है। यथा– ग॒ऽऽ म सा रे सा तथा सां ध॒ऽऽ नि॒ प म – इस भाँति कान्हड़ा अंग प्रयोग करने से कौशिक कान्हड़ा का स्वरूप बनता हैं। गंधार इस राग में कान्हड़ा अंग से आंदोलित एवं मालकौंस अंग से आंदोलित रहित प्रयुक्त होता है।

प्रस्तुत राग कौशिक कान्हड़ा आसावरी थाट के अंतर्गत है। इसमें गंधार, धैवत एवं निषाद स्वर कोमल तथा शेष सभी स्वर शुद्ध प्रयोग किए जाते है। मध्यम वादी तथा षड़ज संवादी स्वर है। इसकी जाति के विषय में कई विद्वानों ने भिन्न–भिन्न मत दिए हैं। कुछ विद्वान इसकी जाति औड़व–सम्पूर्ण मानते हैं तो कुछ विद्वान इसकी जाति षाड़व–सम्पूर्ण मानते है। अधिकतर राग के आरोह में मालकौंस और अवरोह में कान्हड़ा को दिखाया जाता हैं। यथा–

आरोह – नि॒ सा ग॒ म ध॒ नि॒ सां

अवरोह – सां नि॒ ध॒ऽऽ नि॒ प म, ग॒ऽऽ म रे सा

अतः इस राग की जाति औड़व–सम्पूर्ण मानना ही उचित होगा।

इस राग का गायन समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। यह उत्तरांग प्रधान राग है। षड़ज व मध्यम न्यास के स्वर कहे गए है। प्रस्तुत राग में थाट, रागांग तथा प्रकार तीनों भिन्न–भिन्न रागों से संबंधित हैं अर्थात् थाट आसावरी होते हुए इसे मालकौंस अंग से गाया जाता है, परन्तु प्रकार कान्हड़े का हैं। इस प्रकार का अनुठा राग शायद ही प्रचार में कोई दृष्टव्य हों, जिसमें इतनी विषमताएँ देखने को मिलती है। परन्तु यह एक अत्यंत उच्च कोटी का श्रुति मधुर राग है।

प्रस्तुत राग का स्वरूप इतना स्वतंत्र है कि इसका कोई समप्रकृत राग नहीं है। बस मिश्रण वाले रागों में ही आविर्भाव व तिरोभाव हुआ करता है। यह भक्ति रस प्रधान एवं गंभीर प्रकृति का राग होने के कारण गायक, वादक एवं श्रोता सभी के लिए अपने आनन्दमय स्वरूप के माध्यम से आनंदित करने वाला है।

स्वर विस्तार

- सा ऽ ऽ, ध़ नि़ सा ऽ ऽ, ध़ नि़ सा ग सा, सा ग म ऽ, गऽऽ म सारे सा, ध़ नि़ सा गऽ म सारे सा ऽ ऽ, ध़ऽऽ नि़ प़ म़ ऽ, म़ ध़ नि़ नि़ सा ऽ ऽ, गऽऽ म सारे सा ऽ।
- सा ग म ऽ ऽ, गऽऽ म सारे सा, ग म धऽ नि प म ऽ ऽ, ग म प गऽऽ म रे सा ऽ, सा ग म ध नि ध ऽ, ग म ध नि नि सां ऽ ऽ, सां धऽऽ नि प म ऽ, गऽऽ म सारे सा, ध़ नि़ सा।